तेज़ क़दमों से चल रही थी। उसके साथ एक छोटी-सी बच्ची भी थी। उस लड़की के पीछे चन्द आवारा-बदमाश नौजवानों का टोला था जो उस बेचारी के साथ छेड़ख़ानी कर रहे थे और उसे तंग कर रहे थे। लड़की उनके घेरे से निकलने के लिये तेज़-तेज़ चलती जा रही थी और साथ-साथ रो भी रही थी, मगर उन बद-किरदार, आवारा नौजवानों को रोकने वाला कोई नहीं था।

वो आवारा लड़के उस जवान लड़की को निशाना बनाकर **'मुन्नी बदनाम .....', 'शीला की .....', '....फ़ेविकॉल से'** जैसे वाहियात (अश्लील) क़िस्म के गाने गा रहे थे और त़रह़-त़रह़ के कमेण्ट कर रहे थे। यहाँ तक कि बाज़ार में मौजूद दो पुलिसवाले भी ख़ामोश तमाशाई बनकर खड़े थे।

इसी त़रह़ दिन शहर के नामी-गिरामी कॉलेज के पास कुछ आवारा लड़के एक नौजवान लड़की को तंग कर रहे थे, उस पर सरेआम आवाज़ें कस रहे थे। कुछ क़ुसूर उस लड़की का भी था क्योंकि उसने बेह़द वाहियात क़िस्म की ड्रेस पहन रखी थी जिसमें वो क़रीब-क़रीब नंगी नज़र आ रही थी। वो लड़की भी अपना पिण्ड छुड़ाने के लिये तेज़ क़दमों से चल रही थी और उसे भी बचाने वाला कोई नहीं था।

एक ऐसा ही वाक़िया बीते साल **दिल्ली की मेट्रो ट्रेन** में पेश आया। एक लड़की पतली स्ट्रिप वाला टॉप पहने हुए मेट्रो में सफ़र कर रही थी। भीड़ का फ़ायदा उठाकर, कुछ आवारा नौजवानों ने उस लड़की कांधों पर से वो पतली स्ट्रिप नीचे सरका दी और उसके जिस्म का ऊपरी हिस्सा नंगा करने की कोशिश की।

हमारी पढ़ी-लिखी **'हाई-क़्वालिफ़ाइड मॉडर्न'** बहनें भले ही इस बात से इन्कार करें और लचर क़ानून-व्यवस्था

ऑरतों में बाज़ार जाने का रुझान :

आज के दौर में बाज़ारों में सबसे ज़्यादा ता'दाद ऑरतों की होती है। आइए हम इसके अस्बाब (कारणों) पर ग़ौर करें :

01. देखा-देखी :

ऑरतें, बच्चों की त़रह़ एक दूसरे की देखा-देखी काम करना पसंद करती हैं ख़ुसूसन् दुनियवी उमूर में। वो जब अपनी किसी सहेली वग़ैरह को बाज़ार जाते हुए देखती हैं तो फ़ौरन् ख़ुद भी बाज़ार जाकर ख़रीदारी करने पर आमादा हो जाती हैं जिससे उनको बहुत से नफ़्सियाती फ़ायदे ह़ासिल होते हैं; जैसे हर चीज़ का रुक-रुककर देखना, भाव-ताव करना। उसके बाद फिर कभी ख़रीदने पर मा'मला उठाकर रखना। चीज़ के अच्छे बुरे होने पर तब्सरा (चर्चा) करना। ग़ैर मुता'ल्लिक़ा चीज़ों, लोगों और नज़ारों को भी ग़ौर से देखते जाना और उन पर अपने ख़्यालात का इज़हार करना। एक दूसरे को मश्वरे देकर जिस चीज़ की ज़रूरत या जिस चीज़ की ख़रीदारी का ख़्याल भी नहीं था उसकी भी ज़रूरत का एह़सास दिलाना। ऐसा करते वक़्त वे यह सोचने की ज़ह़मत गवारा नहीं करतीं कि बाज़ार जाना और फ़लां-फलां चीज़ ख़रीदना वाक़ई उनकी ज़रूरत है भी या नहीं?

ऑरत चाहे ख़ुद को कितना ही दिलेर कहे, बहादुर बने, लेकिन वो घर से अकेले निकलते हुए घबराती है। इसके बावजूद वो ये भी चाहती है कि बाज़ार जाते हुए मर्द साथ न हों वरना वो उसे उसकी मनमर्ज़ी की ख़रीदारी नहीं करने देंगे और उसे ख़ुद मर्द के सामने अपना हाथ खींचकर रखना पड़ेगा। लिहाज़ा ऑरतें बाज़ार जाते हुए मर्दों की बजाय ऑरतों का साथ पसंद करती हैं।

जब औरतें बाज़ार जाएं .....

अगर बाज़ार जाना बेहद ज़रूरी हो तो क्या किया जाए? इसके लिये चन्द गुज़ारिशात को अपनी बहनों की ख़िदमत में पेश करना चाहेंगे जिनके पेशेनज़र ये किताब तर्तीब दी गई है। इस किताब में जो गुज़ारिशात ज़िक्र की जा रही हैं, उनमें से कुछ का ता'ल्लुक़ मर्दों से भी है, हालांकि हमारी ये कोशिश अपनी मुस्लिम बहनों के लिये ख़ास़ है। **इस उसूल को बयान करने के बाद हम चन्द ऐसी गुज़ारिशात मुसलमान बहनों की ख़िदमत में अ़र्ज़ करना चाहेंगे जिन पर अ़मल करना हर मुसलमान औ़रत पर फ़र्ज़ है।** ये वो इस्लामी आदाब हैं जो बाज़ार जाने वाली हर मुसलमान औ़रत को तहफ़्फ़ुज़ (सुरक्षा) फ़राहम (उपलब्ध) कराने का ज़रिया हैं और उसकी पाकदामनी, इ़फ़्फ़त व अ़स्मत की हिफ़ाज़त का कारण भी है। उनका ज़िक्र इसलिये ज़रूरी है कि आजकल अक्सर औ़रतों ने बाज़ार जाने जाने को दिलपसन्द आ़दत बना लिया है।

01. महरमों के साथ ही बाज़ार जायें :

ऐ मेरी बहनों! हर मुमकिन हद तक कोशिश कीजिये कि आप किसी महरम मर्द के साथ ही बाज़ार जायें ताकि आप बावक़ार व महफ़ूज़ (सम्मानजनक व सुरक्षित) त़रीक़े से ख़रीदारी कर सकें।

हमारी कुछ बहनें, अल्लाह तआ़ला उन्हें नेक समझ अ़ता फ़र्माएँ, महरम मर्द के साथ बाज़ार जाने को एक क़िस्म की पाबन्दी और अपनी आज़ादी पर क़ैद समझती हैं। उनकी ख़्वाहिश होती है कि वो

आख़री बात :

सुन्नत के मुताबिक़ बाज़ार जाने वालों के लिये ख़ुशख़बरी :

जो औरतें व मर्द हज़रात अपनी ज़रूरियात के पेशेनज़र बाज़ार जाते हैं उनके लिये अज़ीम ख़ुशख़बरी व बेहतरीन तोहफ़ा। नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया,

'जो कोई बाज़ार में दाख़िल हुआ और उसने कहा, ला इलाह इल्लल्लाह वह्दहू ला शरीक लहू लहुल मुल्कु व लहुल ह़म्दु युह्यी व युमीतु व हु-व ह़य्युन ला यमूतु बियदिकल ख़ैर व हु-व अ़ला क़ुल्ली शैइन क़दीर.

حدثنا أحمد بن منيع حدثنا يزيد بن هارون أخبرنا أزهر بن سنان حدثنا محمد بن واسع قال قدمت مكة فلقيني أخي سالم بن عبد الله بن عمر فحدثني عن أبيه عن جده أن رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من دخل السوق فقال لا إله إلا الله وحده لا شريك له له الملك وله الحمد يحيي ويميت وهو حي لا يموت بيده الخير وهو على كل شي قدير كتب الله له ألف ألف حسنة ومحا عنه ألف ألف سية ورفع له ألف ألف درجة قال أبو عيسى هذا حديث غريب وقد رواه عمرو بن دينار وهو قهرمان آل الزبير عن سالم بن عبد الله هذا الحديث نحوه

(तर्जुमा : अल्लाह तआ़ला के अ़लावा कोई मा'बूदे बरह़क़ नहीं, वो अकेला है उसका कोई शरीक नहीं। उसी के लिये बादशाहत है, उसी के लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं। वो ज़िन्दा करता है और वही मारता है, और वो ज़िन्दा है वो कभी नहीं मरेगा। उसके हाथ में तमाम भलाई है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है); **तो अल्लाह तआ़ला उसके नाम-ए-आ़माल में ह़ज़ार ह़ज़ार (दस**